Subject :- Sociology Date :- 07/05/2020
Class :- D-II (Subsidiary)
Topic :- निर्धनता, इसके कारण व दूर करने के उपाय
By :- Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga

निर्धनता

Online Study Material No :- 70

एक लम्बी अवधी तक निर्धनता एक आर्थिक समस्या समझी जाती रही है किंतु आज यह एक आर्थिक समस्या के साथ-साथ सामाजिक समस्या भी समझी जा रही है। नवीन जीवन स्तर से सम्बन्धित सुविधाओं को प्राप्त उच्च निम्नके की स्थिति का नाम ही निर्धनता है। निर्धनता की समस्या का सम्बन्ध केवल थोड़े से व्यक्तियों के अपर्याप्त पोषण से नहीं है क्योंकी समृद्ध से समृद्ध देश में भी कुछ व्यक्ति व्यक्तिगत दोषों के कारण आवश्यक सुविधाएँ को प्राप्त करने में असमर्थ हो सकते है। एक समस्या के रूप में निर्धनता वह स्थिति है जिसमें व्यक्तियों का एक बड़ा समूह कार्य करने योग्य होते हुए भी न्यूनतम जीवन स्तर को बनायें रखने में असमर्थ रहता है। निर्धनता को परिभाषित करते हुए Goddard ने कहा है कि "निर्धनता उन वस्तुओं की अपर्याप्त पूर्ति या अभाव है जो एक व्यक्ति तथा उसके आश्रितों के स्वास्थ्य और कुशलताओं को बनाये रखने में आवश्यक है।" इससे स्पष्ट होता है कि निर्धनता केवल भोजन, वस्त्र और आवास की कमी का ही द्योतक नहीं है बल्की उन वस्तुओं की कमी का भी द्योतक है जो एक व्यक्ति तथा उस पर आश्रितों की स्वास्थ्य और कुशलता को बनायें रखने के लिए आवश्यक है।

Gillin & Gillin के अनुसार "निर्धनता वह दशा है जिसमें एक व्यक्ति अपर्याप्त आय या विचारहीन व्यय के कारण अपने स्तर को इतना ऊँचा रखने में असफल रहता है जिससे उसकी शारीरिक एवं मानसिक कुशलता बनी रह सके तथा वह स्वयं और उसके आश्रित उस समाज के मानकों के अनुसार लाभदायक ढंग से काम करने में असमर्थ रहते है जिसका कि वह सदस्य है।" इस परिभाषा में न केवल निर्धनता की बल्की निर्धनता के कारणों को भी स्पष्ट किया है। इनके अनुसार यदि कोई व्यक्ति अपने स्वास्थ्य और कुशलता को बनाए रखने के लिए आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करने में असमर्थ रहता है तब इसी स्थिति को निर्धनता कहा जा सकता है। साथ ही यदि कोई व्यक्ति अपने समाज के मानकों

2

के अनुसार अपने स्तर को बनाये रखने में असफल रहता है तब यह स्थिति भी निर्धनता का ही द्योतक समझा जाता है। Gillins Gillin के अनुसार निर्धनता के दो प्रमुख कारण है:-

(अ) अपर्याप्त आय एवं

(ब) मितव्ययिता का अभाव

निर्धनता के आवरण को स्पष्ट करने के लिए यह वर्णन करना भी आवश्यक प्रतीत होता है कि निर्धनता एक सापेक्षित अवधारणा है। इसका अर्थ है कि एक स्थान विशेष पर जो आय निर्धनता का द्योतक हो सकती है वह आवश्यक नहीं कि दूसरे स्थान पर भी वह आय निर्धनता का द्योतक हो। अतः निर्धनता के निर्धारण के लिए निम्नलिखित चार तत्वों को ध्यान में रखना आवश्यक प्रतीत होता है:-

(अ) किसी स्थान का जीवन स्तर,

(ब) व्यक्ति की आय और उस पर आश्रित सदस्यों की संख्या,

(स) वस्तुओं का बाजार भाव या मुद्रा की क्रय शक्ति,

(द) धन के वितरण की प्रकृति।

निर्धनता के कारण

निर्धनता के संदर्भ में विभिन्न विद्वान ने अपने-अपने सिद्धांत के रूप में कहा है।

Malthus के अनुसार जिस अनुपात में जनसंख्या वृद्धि होती है उस अनुपात में खाद्य पदार्थ में वृद्धि नहीं होती है जिसके फलस्वरूप निर्धनता की स्थिति उत्पन्न होती है।

Karl Marx के अनुसार निर्धनता का प्रमुख कारण पूँजीवादी व्यवस्था है। पूँजीपतियों के पास पूँजी केन्द्रित होने लगती है और श्रमिक अपने श्रम का पारितोषिक से भी वंचित होते हैं। पूँजीपतियों के द्वारा श्रमिकों का शोषण किया जाता है।

Henry George ने भी कहा है कि निर्धनता का प्रमुख कारण कुछ व्यक्तियों द्वारा भूमि पर एकाधिकार कर लेना है।

Keynes के अनुसार बचत और विनियोग (Saving & Investment) के बीच असंतुलन ही निर्धनता है।

Scanned with CamScanner

यद्यपि उपरिलिखित वर्णन से निर्धनता के कारणों पर प्रकाश पड़ता है किंतु कोई भी सिद्धांत पूर्णरूपेन निर्धनता के कारणों को स्पष्ट नहीं कर पाता है।

इसके निम्नलिखित कारकों से सही सही निर्धनता के कारण समझी जा सकती हैं:-

(1) भौगोलिक कारक
(2) आर्थिक कारक
(3) सामाजिक कारक
(4) व्यक्तिगत कारक
(5) जनसंख्यात्मक कारक एवं
(6) राजनीतिक कारक

भौगोलिक कारक के संदर्भ में :-

(अ) प्राकृतिक विपदाएँ (Natural calam) → बहुत से समाज में के लोग केवल इसलिए गरीब (निर्धन) हैं क्योंकी वहाँ अकसरहाँ बाढ़, महामारी, तुफान, आँधी, भूकंप आदि के शिकार होते रहते हैं। एक ओर जहाँ आय में वृद्धि नहीं होती वहीं दुसरी ओर सम्पति भी नष्ट हो जाते हैं। अतः वहाँ के लोग निर्धन हो जाते हैं।

(ब) प्राकृतिक साधनों की कमी (Dearth of natural Resources) और प्राकृतिक साधनों के उपयोग की कमी (Lack of utilisation of natural resources) → इसका अर्थ है कि जिस समाज में प्राकृतिक साधनों की कमी रहती है या प्राकृतिक साधनो के अधिकता के बावजूद भी उसका प्रयोग नहीं हो पाता है वहाँ निर्धनता की स्थिति उत्पन्न होती है। संभवतः इसी कारण कहा जाता है कि "India is rich but Indians are Poor"

(स) पथरीली एवं रेगिस्तानी भूमि की अधिकता → इस तरह की भूमि अनुपजाऊ होती है। अतः इस क्षेत्र में कृषि का कार्य बहुत कम होने के कारण भी व्यक्ति निर्धन बने रहते हैं।

आर्थिक कारक के संदर्भ में

4

(क) अपर्याप्त एवं असंतुलित उत्पादन (Insufficient & unbalanced Production) → अपर्याप्त उत्पादन होने के कारण वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होती है। ऐसी स्थिति में मुद्रा की क्रयशक्ति कम हो जाने के कारण निर्धनता में वृद्धि होती है। इसी तरह असंतुलित उत्पादन या आवश्यकता से अधिक उत्पादन होने के कारण मजदूरों की छँटनी होती है। जिनकी छँटनी हो जाती है उनका आय का स्रोत भी समाप्त हो जाता है। जो निर्धनता को बढ़ावा देता है।

(ख) कुटीर उद्योगों की पिछड़ी दशा (Backward state of cottage industries) → कुटीर उद्योगों की पिछड़ी दशा के कारण छोटी-छोटी वस्तुओं को भी विदेशों से आयात करना पड़ता है। इससे बहुत धन विदेश में आयात के माध्यम से चला जाता है जो निर्धनता की स्थिति उत्पन्न करती है।

(ग) पूँजी का अनुत्पादक संचय (Unproductive saving of capital) → पूँजी का अनुत्पादक संचय के कारण रोजगार के अवसरों में वृद्धि नहीं हो पाती है जो निर्धनता को बढ़ावा देती है।

(घ) बेकारी (Unemployment) → आर्थिक कारकों में बेकारी निर्धनता का प्रत्यक्ष और आधारभूत कारण है। बेकारी के कारण व्यक्ति की आय के साधन समाप्त हो जाते हैं, जबकी पारिवारिक खर्च पूर्णतया बंद नहीं किया जा सकता है। इसके कारण निर्धनता में वृद्धि होती है।

(ङ) आर्थिक उतार-चढ़ाव (Economic fluctuation) → इसका अर्थ वस्तुओं के महत्व (मूल्य) में एकाएक कमी या वृद्धि होना। ये दोनों प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्धनता को बढ़ावा देती है।

(च) धन का असमान वितरण (Unequal distribution of wealth) → Henry George ने इस निर्धनता के कारण का उल्लेख किया है। "धन के असमान वितरण के कारण धन का अधिकांश भाग कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित हो जाता है जो निर्धनता को जन्म देता है।"

सामाजिक कारक के संदर्भ में

(क) दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था (Defective educational system) → वर्तमान शिक्षा रोजगारोन्मुखी न होने के कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्धनता को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार ठहरायी जा सकती है। वर्तमान में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद भी बहुत शिक्षित युवकों को बेरोजगारी का शिकार होना पड़ता है। जो निर्धनता की समस्या को बढ़ावा प्राप्त करवाता है।

(ख) सामाजिक कुरीतियाँ एवं अंधविश्वास (Social evils & Superstitions) → व्यवसाय एवं खान-पान से सम्बन्धित अंधविश्वासों विवाह सम्बन्धी कुरीतियाँ तथा मृत्यु संस्कार सम्बन्धित कुरीतियों के कारण एक व्यक्ति के आय या सम्पत्ति का एक बड़ा भाग व्यर्थ में नष्ट हो जाता है और निर्धनता उत्पन्न हो जाती है।

व्यक्तिगत कारक के संदर्भ में

Gillin & Gillin ~~के समस्या को~~ के अनुसार "विचारहीन व्यय या अपर्याप्त आय निर्धनता का कारण है" आलसी, व्यसनी, शराबी, जुआरी आदि व्यक्तियों से समृद्ध बनने की आशा नहीं की जा सकती। कुछ परिवार में वृद्धावस्था और धनोपार्जन करने वाले व्यक्ति की मृत्यु भी निर्धनता का व्यक्तिगत कारण समझा जाता है।

जनसंख्या कारकों के कारण भी निर्धनता की स्थिति उत्पन्न होती है। Malthus के अनुसार "खाद्यान्न की तुलना में जनसंख्या में वृद्धि होना निर्धनता का कारण है"

राजनीतिक कारक भी निर्धनता को उत्पन्न करने में कुछ हद तक योगदान देते हैं यदि वित्तीय नीतियाँ घोषित से पहले मालूम हो जाय 'करों' का भार आवश्यकता से अधिक हो जाए, आयात की अपेक्षा निर्यात कम हो और राज्य की गलत नीतियों के कारण अन्तर्राष्ट्रिय युद्ध का सामना करना पड़े तब निर्धनता की स्थिति उत्पन्न होना अस्वाभाविक नहीं प्रतीत होता है।

निर्धनता निवारण के उपाय

(1) कृषि में सुधार → भारत एक कृषि प्रधान देश है। अतः इसकी स्थिति में सुधार आवश्यक होने से निर्धनता की समस्या का निराकरण किया जा सकता है जैसे भूमि, सिंचाई, बीज, नए उपकरण, खाद्य एवं उन्नत ज्ञान से, कृषि में सुधार किया जा

Scanned with CamScanner

सकता है।

(2) कुटीर उद्योग की समुचित व्यवस्था → वृहत उद्योग के साथ-साथ कुटीर उद्योग का भी विकास होनी चाहिए। इससे बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा और कुल उत्पादन में भी वृद्धि होगी, जिसके परिणामस्वरूप निर्धनता में कमी आएगी।

(3) जनसंख्या पर नियंत्रण → जनसंख्या पर नियंत्रण करने पर भी निर्धनता को दूर किया जा सकता है। क्योंकी Malthus का मानना है कि जनसंख्या ज्यामिती दर से बढ़ती है एवं खाद्यान्न अंकगणितीय रूप से। जनसंख्या पर नियंत्रण होने के फलस्वरूप व्यक्ति की प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोत्तरी होगी जो निर्धनता को दूर कर पाती है।

(4) प्राकृतिक साधनों एवं शक्तियों का अधिकतम उपयोग → यदि प्राकृतिक साधनों व शक्तियों का अधिकतम उपयोग होगी तो प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होगी जो निर्धनता को दूर कर सकती है।

(5) श्रमिकों की दशा सुधारकर, कार्य की दशाओं को स्वस्थ बनाकर, मजदूरी का निर्धारण करके, एवं उनकी सुरक्षा को प्राथमिकता देकर निर्धनता को कम किया जा सकता है।

(6) सामाजिक संस्थाओं एवं कुरीतियों में परिवर्तन से निर्धनता दूर किया जा सकता है। क्योंकी इसमें सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास, निर्धनता एवं ऋणग्रस्तता की समस्या विद्यमान होती है। अतः इन सभों को दूर करके निर्धनता को कम किया जा सकता है।

(7) शिक्षा का विकास → निर्धनता को दूर करने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। क्योंकी शिक्षा के माध्यम से ही वे सही, गलत का निर्धारण एवं अपने अधिकार व कर्तव्य को समझते हैं एवं उसी के अनुसार अपनी भूमिका अदा करते हैं। अतः स्पष्ट है कि शिक्षा का विकास होने से निर्धनता को दूर किया जा सकता है।

(8) पंचवर्षीय योजना → निर्धनता को दूर करना ही प्रत्येक पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य रहा है। क्योंकी पंचवर्षीय योजना से पूर्व व्यक्तियों की स्थिति और भी खराब थी। इसलिए व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो ये ही इसका मुख्य लक्ष्य है।

S.N. Choudhary
L.N.M.U